वार्तालाप–526, बम्बई, पार्ट–1, तारिख 2.3.08
Disc.CD No. 526, dated 02.03.08 at Bombay-Part-1

11.40–13.23
जिज्ञासु– बाबा सतयुग–त्रेता में सोझरा और द्वापर, कलियुग में रात बताई। द्वापर, कलियुग में रात–दिन दोनों होता है, सतयुग में भले सोझरा होता है...
बाबा– हद की बात है, बेहद की बात हैं? बेहद का बाप बेहद के बच्चों से बेहद की बातें करते है कि बेहद का बाप हद के बच्चों से हद की बातें करते हैं? आप क्या बोल रहे हैं? आप हद की बात बोल रहे हैं, बेहद की बात बोल रहे हैं?
जिज्ञासु– दोंनो बातें बाबा।
बाबा– दोंनो बातें! दोंनो बाते, जिस सतयुग के लिए आपने कहा कि वहाँ दिन और रात होता है कि नहीं होता है?
जिज्ञासु– नहीं होता है। दिन ही दिन होता है वहाँ।
बाबा– वहाँ तो चंद्रमा होता ही नहीं है। रात होने की बात ही नहीं है। जैसे उत्तरी ध्रुव, दक्षिणी ध्रुव पर ऐसा टाईम भी होता है, 6 महीने का कि लगातर दिन ही दिन रहता है। ऐसे ही जब 6 महीने का दिन हो सकता है तो आधा कल्प का दिन नहीं हो सकता?
जिज्ञासु– हो सकता है।
बाबा– हो सकता है।
जिज्ञासु– द्वापर–कलियुग में दिन–रात दोंनो होते है ना बाबा?
बाबा– द्वापर–कलियुग में जो रात होती है वो निश्चय–अनिश्चय की निशानी है। क्या? भक्तों को अभी–2 निश्चय होता है, भगवान है। भगवान का साक्षात्कार हो गया समझते हैं भगवान है लेकिन भगवान होता नहीं। वो स्थूल दिन और रात की बात है और यहाँ है बेहद के दिन और बेहद रात की बात। जब बेहद का ज्ञानसूर्य बुद्धि में प्रकटा हुआ है, पहचान बुद्धि में बैठी है तो क्या है? दिन है और जब अनिश्चय बुद्धि हो जाते हैं तो रात हो जाती है। ब्रह्मा का दिन भी है तो ब्रह्मा की रात भी है।

Time: 11.40-13.23
Student: Baba, the Golden Age and Silver Age are said to be day and the Copper Age and Iron Age are said to be night. There is night as well as day in the Copper Age and Iron Age, while there is only day in the Golden Age.....
Baba: Is it in a limited sense or in an unlimited sense? The unlimited Father speaks to the unlimited children in an unlimited sense or does the unlimited Father speak in a limited sense to the limited children? What are you saying? Are you speaking in a limited sense or in an unlimited sense?
Student: In both senses Baba.
Baba: In both senses? Both senses; the Golden Age, for which, you said that there is both day and night or not?
Student: It is not there. There is only the day over there.
Baba: There is no moon there at all. There is no question of night at all. Just as there is a period on the North Pole and South Pole when there is continuously day for 6 motnhs. Similarly, when there can be day for 6 months, can't there be day for half a *kalpa* (cycle)?
Student: There can be.
Baba: There can be.
Student: There is day as well as night in the Copper Age and Iron Age Baba, isn't there?
Baba: The night that exists in the Copper Age and the Iron Age is an indication of faith and faithlessness. What? Just now the devotees develop faith that God is present. When they have divine visions of God, they think that God is present, but actually there is no God there. That is about the physical day and night and here it is about day and night in an unlimited sense.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

When the Sun of knowledge in an unlimited sense has risen in the intellect, when the recoginition is seated in the intellect, then what is it? It is day and when we become the ones with a doubtful intellect, it is night. There is the day as well as the night of Brahma.

13.30–15.09
जिज्ञासु– बाबा, संगमयुग में भक्तों को अभी तक भक्ति का फल बाबा दे रहे हैं तो फिर उसकी भक्ति तो बढ़ जायेगी ना?
बाबा– हाँ।
जिज्ञासु– तो मतलब भक्तिमार्ग पूरा नहीं होगा... । भक्ति का अगर फल देना शुरू किया संगमयुग में भी तो भक्तिमार्ग बढ़ता जायेगा, खत्म नहीं होगा।
बाबा– नहीं। उस आत्मा के लिए जिसको भक्ति का फल मिल गया उसकी भक्ति बढ़ेगी या भक्ति फाँ हो जायेगी?
सभी– फाँ हो जायेगी।
जिज्ञासु– भक्ति करना शुरू करेंगे ना?
बाबा– दूसरे लोंगो से कनेक्शन थोड़े ही है। जिसको भगवान मिला, जिसको भगवान से ज्ञान मिला उसकी बात है। औरों का तो ज्ञान मिला ही नहीं, भगवान मिला ही नहीं।
जिज्ञासु– ज्ञान की बात नहीं...
बाबा– बिना ज्ञान के भक्ति कैसे खलास होगी? ज्ञान–भक्ति और वैराग कहा जाता है। कहा ही इसलिए जाता है कि ज्ञान मिलता है तो भक्ति से वैराग हो जाता है। ज्ञान मिला और भक्ति खलास। नहीं तो ज्ञान मिला ही नहीं। भक्तिमार्ग के आड़म्बरों में कोई फँसा हुआ है लगातर और सारे ही भक्तिमार्ग के आड़म्बरों को अनुगमन करता है तो कहेंगे उसको ज्ञान मिला?
जिज्ञासु– नहीं।
बाबा– मिला ही नहीं। तो ज्ञान मिलने से भक्ति खलास होती है। ऐसे नहीं कह सकते कि ज्ञान मिलने से भक्ति बढ़ जाती है।

Time: 13.30-15.09
Student: Baba, Baba is giving the fruit of *bhakti* to the devotees even now in the Confluence Age; so, their *bhakti* will increase, will it not?
Baba: Yes.
Student: I mean to say the path of *bhakti* will not end... if He starts giving the fruit of *bhakti* in the Confluence Age as well, then the path of *bhakti* will increase, it will not end.
Baba: No. For the soul, who received the fruit of *bhakti*, will his *bhakti* increase or will it vanish?
Everyone: It will vanish.
Student: They will start doing *bhakti*, will they not?
Baba: There is no connection with other people. It is about the one who found God, the one who received knowledge from God. Others did not receive the knowledge at all; they did not find God at all.
Student: It is not about knowledge...
Baba: How will the *bhakti* end without knowledge? It is said, knowledge, *bhakti* and *vairag* (detachment). It is said so only because when someone receives knowledge, he develops detachment from *bhakti.* When someone receives knowledge, *bhakti* ends. Otherwise, he has not received knowledge at all. If someone is entangled in the rituals of the path of *bhakti* continuously and if he follows all the rituals of *bhakti,* then will it be said that he received knowledge?
Student: No.
Baba: He did not receive at all. So, *bhakti* ends when someone receives knowledge. It cannot be said that *bhakti* increases when someone gets knowledge.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

15.20–18.54
जिज्ञासु– ये जो 500 करोड़ की आबादी है, जब खलास हो जायेंगे तभी परिवर्तन होगा। आत्मा के अन्दर परिवर्तन होगा।
बाबा– आत्मा के अंदर परिवर्तन पहले होता है या पाँच तत्वों के अंदर परिवर्तन पहले होता है?
जिज्ञासु– आत्मा के अंदर।
बाबा– हाँ, जो आत्माओं का परिवर्तन आत्माओं का बाप परमपिता परमात्मा के द्वारा होता है। परमपिता परमात्मा जो आत्माओं का बाप है वो चैतन्य आत्माओं अर्थात् मन–बुद्धि का परिवर्तन करता है ज्ञान से और इस मनुष्य सृष्टि का जो बाप है जो इस मनुष्य सृष्टि पर ऑलराउन्ड़ पाँच तत्वों में लिप्त होकर के पार्ट बजाता है जब वो सम्पन्न स्टेज धारण करता है तो प्रकृति के पाँच तत्वों का परिवर्तन होता है। उसको कहते है प्रकृति पति। क्या? ज्योतिबिंदु शिव को प्रकृति पति नहीं कहेंगे। किसको कहेंगे? जो मनुष्य सृष्टि का पिता है वो पहले प्रकृति पति बनता है फिर नम्बरवार बच्चे भी बनते है। प्रकृति है पाँच तत्वों का संघात। उन पाँच तत्वों का परिवर्तन जब तक नहीं किया है तब तक सृष्टि का परिवर्तन नहीं कहा जा सकता। तो 2036 में आत्मा का परिवर्तन होगा, प्रकृति का परिवर्तन होगा या दोंनो का परिवर्तन होगा?
जिज्ञासु– दोंनो को होगा।
बाबा– दोंनो का परिवर्तन 2036 में होगा?
जिज्ञासु–...
Time: 15.20-18.54
Student: The transformation will take place only when the population of 5 billion [human beings] perishes. Transformation will take place in the soul.
Baba: Does transformation take place within the soul first or does transformation take place within the five elements first?
Student: Within the soul.
Baba: Yes, the transformation of the souls takes place through the Father of the souls, the Supreme Father Supreme Soul. The Supreme Father Supreme Soul who is the Father of souls transforms the living souls, i.e. the mind and intellect through knowledge and the father of this human world, who plays and all-round part in the midst of the five elements in this human world, when he takes on the complete stage, then the five elements of the nature are transformed. He is called *prakritipati* (Lord of nature). What? Point of light Shiv will not be called *prakritipati*. Who will be called *[prakritipati]*? The father of the human world becomes *Prakritipati* first, then the number wise children also become *[prakritipati]*. *Prakriti* (nature) is a combination of five elements. Unless those five elements have been transformed, the world cannot be said to have transformed. So, will the soul be transformed in 2036, will the nature be transformed or will both be transformed?
Student: Both.
Baba: Will both be transformed in 2036?
Student said something.

बाबा– आत्माओं का परिवर्तन भी 2036 में हो जावेगा। पाँच तत्वों के संघात का परिवर्तन भी 2036 में हो होगा लेकिन सारे सृष्टि पर एक साथ नहीं, नम्बरवार होगा। आत्मा का परिवर्तन 2018 से ही हो जायेगा और प्रैक्टिकल में देखने में आवेगा। शरीर सड़ते जावेंगे और आत्मा पॉवरफुल होती जावेगी। अभी आत्मा में कमजोरी आ जाती है बीच–बीच में। संग का रंग, क्या? लग जाता है। चाहे वो राम की आत्मा हो, चाहे कृष्ण की आत्मा हो सबको संग का रंग लगता है। भले झटपट जैसे साईकिल पर चढ़ने वाला झट से उठके खड़ा हो जाता है। अपने को चेन्ज कर ले जल्दी वो अलग बात लेकिन संग का रंग सबको लगता है।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

लेकिन ऐसी भी एक स्टेज आवेगी आत्मा की नम्बरवार कि संग का रंग लगना बंद हो जावेगा। तो उस एक की बात भक्ति–मार्ग में उठाय ली है सबके लिए ''आत्मा सो परमात्मा''।

Baba: The souls will be transformed in 2036 as well as the transformation of the combination of the five elements will also take place in 2036, but it will not take place in the entire world at the same time; it will take place number wise. The transformation of the soul will take place from 2018 itself and it will be seen in practical. The bodies will go on decaying and the soul will go on becoming powerful. Now the soul becomes weak in between.The colour of the company; what? It is applied. Whether it is the soul of Ram or the soul of Krishna, everyone is coloured by the company. Although, just as a cyclist (who has fallen down) gets up immediately, they may change themselves immediately, that is a different subject, but everyone is coloured by the company. But the soul will also achieve such a stage numberwise (according to its capacity) that it will stop being coloured by the company. So, the issue of that One has been picked up in the path of *bhakti* for everyone that the soul is equal to the Supreme Soul.

18.55–20.35

जिज्ञासु– बाबा नक्षत्र किसको कहते हैं?

बाबा– एक सितारे होते हैं स्वयं चमकते हैं उनको और किसी के चमक की जरूरत नहीं होती है और एक सितारे ऐसे होते हैं दूसरों की चमक से चमकीले बनते हैं। स्वंय प्रकाशित नहीं होते। जो सितारे स्वयं प्रकाशित होते हैं आसमान में ध्यान से देखें वो यूं यूं यूं यूं टिमटिमाते रहते हैं और जो टिमटिमाते नहीं हैं एक जैसी स्थिर रोशनी रहती है उनके ऊपर नक्षत्रों का प्रभाव पड़ता है। तो नक्षत्र हैं स्वयं प्रकाशित होने वाले और जो गृह हैं वो नक्षत्रों के प्रभाव से प्रकाशित होने वाले हैं।

जिज्ञासु– नक्षत्रों के प्रभाव में और गृहों के प्रभाव में क्या अंतर है बाबा?

बाबा– कहाँ नक्षत्र और कहाँ गृह। वास्ट (vast) अंतर है और फिर कहाँ उपगृह, चंद्रमा। उपगृह, गृह का हिस्सा होता है तो नक्षत्र हैं वो ऐसे होते है जैसे सूर्य।

Time: 18.55-20.35

Student: Baba, what is meant by *nakshatra*?

Baba: One type of stars is self-luminous. They do not require the light of anyone else. And one kind of stars becomes luminous with the light of the others. They are not self-luminous. If you see the sky carefully, the self-luminous stars keep twinkling like this and those that do not twinkle; those which remain constant are influenced by stars (*nakshatra*). So, *nakshatra* are self-luminous and the planets become luminous under the influence of the *nakshatras*.

Student: What is the difference between the influence of the stars and the influence of planets?

Baba: There is a vast difference between *nakshatras* and planets. There is a vast difference. And then can there be a comparison with the satellite, Moon? A satellite is a part of the planet. So, *nakshatras* are just like the Sun.

21.36–23.40

जिज्ञासु– अंत में एक शरीर में अनेक आत्मायें प्रवेश करेगी तो सभी आत्माओं में प्रवेशता होगी या कोई न चाहता है कि मेरे शरीर में कोई न आवे। ऐसा भी हो सकता है क्या?

बाबा– आत्मा कमजोरी के काम करें, श्रीमत के बरखिलाफ चलती रहे तो श्री–श्री 108 शिव बाप उसको कन्ट्रोल करेगा या मनमत पर चलने वाली, मनुष्य मत पर चलने वाली आत्मा दूसरों से कन्ट्रोल होती रहेगी? अरे, जो बाप की मत पर चलेगा ही नहीं तो बाप क्या करेगा? लगाम ढ़ीली छोड़ देगा, दूसरों को मौका मिल जायेगा। चलो, तुम ऊँच ते ऊँच के कन्ट्रोल में नहीं

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

आते तो आओ हमारे हद्दे में। दूसरी आत्मा प्रवेश कर जायेगी। इसलिए क्या करना चाहिए? जो ऊँच ते ऊँच बाप मिला है उस ऊँच ते ऊँच बाप की मत पर ही चलना है, न मनमत चलाना हैं और ना मनुष्यों की मत पर चलना है। कमजोर आत्मायें होती हैं वही तिनके का सहारा लेती हैं, पॉवरफुल आत्मायें, पॉवरफुल का सहारा लेती हैं। इब्राहिम, बुद्ध, क्राईस्ट ये भी पॉवरफुल आत्मायें परमधाम से आती हैं तो नम्बरवार नारायणों में प्रवेश करती हैं या अव्वल नंबर नारायण में प्रवेश कर सकती हैं?
सभी ने कहा–नम्बरवार)
Time: 21.36-23.40
Student: In the end many souls will enter one body; so, will this take place in case of all the souls or if someone wishes that nobody should enter my body... Is this possible too?
Baba: If a soul performs tasks of weakness, if it continues to act against *shrimat*, then will the *Shri-Shri* 108 Father Shiv control him or will the soul who follows his own opinion, who follows the opinions of human beings be controlled by others? *Arey*, if someone does not follow the Father's opinion at all, then what will the Father do? He will let the reins loose and others will get a chance. [They think:] "OK, if you do not come under the control of the highest one, then come under my control". Another soul will enter him. This is why what should you do? We should follow only the opinion of the highest father whom we have found; we should neither follow the opinion of our mind nor should we follow the opinion of human beings. Only weak souls take the support of twigs; powerful souls take the support of the powerful ones. Abraham, Buddha, Christ are also powerful souls who come from the Supreme Abode; so, do they enter the number wise Narayans or can they enter the number one Narayan?
Everyone said – *Numberwise* one.

23.42–26.11
जिज्ञासु– बाबा, जब भी भक्तिमार्ग में कोई अनुष्ठान या पूजन करते हैं तो पवित्र कन्याओं का पूजन करते हैं और कुमारों.....
बाबा– नहीं–नहीं। हर अनुष्ठान में कन्याओं का पूजन नहीं होता है। जो देवियों का पूजन होता है, नवग्रह जब होते है, नवरात्रि जब होती है तो देवियों का पूजन होता है। उन देवियों के पूजन में माताओं को नहीं आमंत्रण देते है। किसको आमंत्रण देते है? कन्याओं को आमंत्रण देते है और जितनी कम उम्र की कन्या होगी उसका चुनाव पहले करते है। जितनी ज्यादा उम्र की कन्या होगी उसको छोड़ेंगे। क्यों? क्योंकि कम उम्र की कन्या में प्यूरिटी की संभावना जास्ती होती है। हाँ, फिर आगे?
Time: 23.42-26.11
Student: Baba, whenever any ritual or worship takes place in the path of *bhakti*, they worship the pure virgins (*kumaris*) and *Kumars* (bachelor)…
Baba: No, no. Virgins are not worshipped in every ritual. When the *devis* (female deities) are worshipped; when *navratri* is celebrated, *devis* are worshipped. During the worship of those *devis*, mothers are not invited. Who is invited? The virgins are invited and the younger the virgin; they are selected first. The older the virgin; she will be left out. Why? It is because the possibility of purity in the younger virgin is more. Yes, so what else do you want to ask?

जिज्ञासु– कुमारों की पूजा क्यों नहीं करते?
बाबा– भारत में कन्यायें हैं, सुरक्षित वातावरण में ज्यादा रखी जाती हैं या कुमारों को सुरक्षित वातावरण में ज्यादा रखा जाता है?
जिज्ञासु– कन्याओं को।
बाबा– कन्याओं को। क्योंकि स्त्री जाति एक ऐसी जाति है अगर उसकी सुरक्षा नहीं कि और वो व्यभिचारणी बन गई तो उसका खून बदल जाता है, पुरूषों का खून बदलता नहीं; लिंग भेद के

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

कारण। लिंग भेद की बात है ना? जो कन्यायें–मातायें है उनमें खून समा जाता है और पुरूषों के अंदर खून समाता नहीं है; संग का रंग का। उतना नहीं समाता। हाँ, बुद्धि से याद आता है, दृष्टि में समा जाता है लेकिन खून पेट में नहीं इकट्ठा होता; इसलिए गीता में लिखा हुआ है कि स्त्रियाँ जहाँ बिगड़ जाती है वहाँ सारा परिवार, सारा देश नेस्तनाबूद हो जाता है। सवाल का जवाब मिला?
जिज्ञासु– हाँ, मिल गया।
Student: Why are *Kumars* not worshipped?
Baba: In India, are the virgins kept in a safer atmosphere or are the Kumars kept in a safer atmosphere?
Student: Virgins.
Baba: The virgins. It is because a woman is such that if she is not safeguarded and if she becomes adulterous, then her blood changes; the blood of men does not change because of the difference in gender. It is about a difference in gender, isn't it? The blood assimilates in the virgins and mothers, while the blood of the colour of company does not assimilate in the men. It does not assimilate to that extent. Yes, they remember through the intellect, the vision assimilates it, but the blood does not collect in the abdomen; this is why it has been written in the Gita that the place where women spoil, the entire family, the entire country is destroyed. Did you get the answer to your question?
Student: Yes, I got it.

26.12–28.36
जिज्ञासु– बाबा, मुरलीधर से प्यार माना मुरली से प्यार।
बाबा– जिसने मुरली को धारण कर लिया है, धर लिया है। मुरलीधर माना? जिसने मुरली को धर लिया हैं। जैसे कहते है गंगाधर। किसको धर लिया? गंगा को धर लिया, अपने कन्ट्रोल में कर लिया। ऐसे ही मुरलीधर, जिसने मुरली को पूरा–2 सौ परसेन्ट धारण कर लिया। मुरलीधर को याद करना, मुरली को धारण करने के बराबर है। मुरली से प्यार किया माना मुरलीधर से प्यार किया। भगवान जब इस सृष्टि पर आता है वो तो शिव है, निराकार है वो आकर के हमको क्या देता है?
जिज्ञासु– ज्ञान।
बाबा– ज्ञान माना? मुरली। ज्ञान माना क्या? ज्ञान माना वो ज्ञान नहीं जो ब्रह्मा के मुख से सुनाया। उसका तो नाम रख दिया है मुरली भक्तिमार्ग में। जिसे भक्तिमार्ग में बाँसुरी नाम दिया है। बाँस की बाँसुरी। ऐसे ही ब्राह्माणों की संगमयुगी दुनिया में दादा लेखराज के मुख से जो वाणी निकली उसको कहेंगे मुरली। भक्तिमार्ग की बात है; लेकिन असली मुरली क्या है? मुरली असली वो है जो मुरली का एक वाक्य का ताल–मोल मुरली के हर वाक्य के ताल–मेल से मेल खायें। एक वाक्य भी अथवा एक वाक्य के अर्थ का भी दूसरे वाक्य के अर्थ से क्रॉस न होता हो। चाहे जितना भी मुरली को मोड़ ले लेकिन अर्थ एक ही निकले।
Time: 26.12-28.36
Student: Baba, love for the *Murlidhar* (the holder of flute or narrator of Murlis) means love for the *Murli*.
Baba: The one who has held (assimilated) the flute (murlis). What is meant by *Murlidhar*? The one who has held the murlis. For example, it is said *Gangadhar*. Whom did he hold? He held Ganga; he took her under his control. Similarly *Murlidhar,* the one who assimilated the Murli hundred percent. Remembering *Murlidhar* is equal to inculcating the Murli. Love for *Murli* means love for *Murlidhar*. When God comes in this world..., He is Shiv, the incorporeal one, what does He give us?
Student: Knowledge.
Baba: What is meant by knowledge? *Murli*. What is meant by knowledge? Knowledge does not mean the knowledge that was narrated through the mouth of Brahma. It was named *Murli* in the

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

path of *bhakti*, it has been named *baansuri* (flute) in the path of *bhakti*. The wooden flute. Similarly, in the Confluence Age world of Brahmins, the versions that emerged from the mouth of Dada Lekhraj are called Murlis. It is about the path of *bhakti*; but what is the true *Murli*? The true *Murli* is the one where every sentence of the *Murli* tallies with each other. Not even a single sentence, not even the meaning of a single sentence should *cross* (contradict), i.e. clash with the meaning of another sentence. To whatever extent we may twist the *Murli*, but the same meaning should emerge.

30.30–31.15

जिज्ञासु– बाबा, जो रेग्युलर क्लास करते हैं उसके लिये कहा है कि मुरली से प्यार माना मुरलीधर से प्यार। अगर आकर के जो सोते हैं उसके लिये कहेंगे कि मुरली से प्यार?
बाबा– आकर के?
जिज्ञासु– सोते हैं क्लास में, मुरली के समय उसको कहेंगे मुरलीधर प्यार?
बाबा– जो सोते हैं उससे ये साबित नहीं होता कि उनके ऊपर पापों का बोझा इतना ज्यादा चढ़ गया है कि अब वो मुरली सुनने की और बाप से दृष्टि लेने की उनकी तथा ही नहीं । अब हकदार ही नहीं हैं।
जिज्ञासु– मुरली सुनते समय नींद नहीं आती, योग में आती है।
बाबा– वो अपना–अपना हिसाब–किताब अलग–अलग।

Time: 30.30-31.15

Student: Baba, for those who attend the classes regularly, it has been said that love for the *Murli* means love for the *Murlidhar*. If someone comes and sleeps, will it be said that he has love for the *Murli*?
Baba: Comes and?
Student: If someone sleeps at the time of *Murli*, will he be said to have love for *Murlidhar*?
Baba: Don't those who sleep (at the time of *Murli*) prove that they have accumulated the burden of sins to such an extent that they do not have the power to listen to *Murli* and to receive *drishti* from the Father? They are not entitled to it now.
Student: Some people do not sleep while listening to *Murli*; they feel sleepy during *yog*.
Baba: Everyone has a different *karmic* account.

31.18–32.58

जिज्ञासु– हद के सागर से हद का नमक निकलता है। बेहद के सागर से कौनसा नमक निकलता है?
बाबा– वाणी खारी लगती है या नहीं लगती है ब्रह्माकुमारियों को? जो तथाकथित ब्राह्मण हैं उनको ज्ञान सागर की, जो सागर का जल है वो खारा लगता है या मीठा लगता है?
जिज्ञासु– खारा लगता है।
बाबा– और एड़वान्स पार्टी वालों को?
जिज्ञासु– मीठा लगता है।
बाबा– मीठा लगता है। इसलिए बोला सागर खारा भी और सागर मीठा भी। वो जो स्थूल सागर है उसमें भी कोई–कोई धारायें ऐसी बह रही हैं जो सीधी बर्फ से पानी आता है, बर्फ के पहाड़ों से और एकदम मीठा पानी होता है।
जिज्ञासु– खारेगाँव और खार का क्या अंतर? मीठा पानी पीने वाले लेकिन खारेगाँव में क्यों?
बाबा– अच्छा, फर्रूखाबादी नमकीन बहुत मशहूर है। फर्रूखाबाद के नमकीन में, खार में क्या विशेषता है जो बाबा ने मुरली में इतना बोला हुआ है – फर्रूखाबाद के लोग मालिक को बहुत मानते है। अरे, जो बहुत मीठा होगा वो बहुत खारा भी होगा, जो बहुत खारा होगा वो कभी टाईम आने पर बहुत मीठा भी होगा। खारा माना पतित और मीठा माने पावन।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Time: 31.18-32.58
Student: The limited salt comes from the limited ocean. Which salt comes from the unlimited ocean ?
Baba: Do the Brahmakumaris find the versions [of Baba] to be salty or not? Do the so-called Brahmins find the water of the ocean of knowledge, the ocean to be salty or sweet?
Student: They find it to be salty.
Baba: And what about those who belong to the advance party?
Student: They find it to be sweet.
Baba: They find it to be sweet. This is why it was said that the ocean is salty as well as sweet. Even in that physical ocean there are certain streams of which comes directly from ice, comes from the mountains of ice and is completely sweet water.
Student: What is the difference between Khareygaon and Khar? They drink sweet water, but why are they in Khareygaon?
Baba: OK, the *namkeen* (salted delicacies) from Farrukhabad is very famous. What is the specialty of the *namkeen* of Farrukhabad that Baba has mentioned so many times in the Murlis, "The people of Farrukhabad have a lot of faith in the Master (*maalik*)". *Arey*, the one who is very sweet will also be very salty; and the one who is very salty will also be very sweet when the time comes. *Khara* (salted) means sinful and sweet means pure.

34.40–39.50
जिज्ञासु– एक मुरली में बोला है कि शंकर के वीर्य से बिच्छू टिंड़न पैदा हुए।
बाबा– हाँ, जी।
जिज्ञासु– तो ये क्या है बाबा ?
बाबा– जो बिच्छू टिंड़न पैदा हुए वो किस बात के निमित्त बने?
जिज्ञासु– परचिंतन, विनाश के।
बाबा– विनाश के निमित्त बने ना? तो विनाश जो है वो जरूरी है या जरूरी नहीं है?
जिज्ञासु– जरूरी है।
बाबा– अगर वो बिच्छू टिंड़न पैदा न हो तो इन राक्षसों की दुनिया का सफाया नहीं हो सकता। उन बिच्छू टिंड़नों में सबसे पॉवरफुल कौन है? जो आत्मा सब आसुरों का खलासा कर देती है।
जिज्ञासु– महाकाली।
बाबा– महाकाली। जैसे रूद्रमाला का फस्ट मणका बाप के सबसे नजदीक है ऐसे लास्ट मणका भी सबसे जास्ती नजदीक है।
Time: 34.40-39.50
Student: It has been said in a Murli that scorpions and spiders (*bichchu-tindan*) were born from the semen (*veerya*) of Shankar.
Baba: Yes.
Student: So, what is this Baba?
Baba: The scorpions and spiders that were born became instruments in what?
Student: Thinking about others; destruction.
Baba: They became instruments for destruction, didn't they? So, is destruction necessary or not?
Student: It is necessary.
Baba: If those scorpions and spiders are not born, then this world of demons cannot be cleaned. Who is the most powerful one among those scorpions and spiders; the soul which destroys all the demons?
Student: Mahakali.
Baba: Mahakali. Just as the first bead of the *Rudramala* (the rosary of Rudra) is the closest to the Father, the last bead is also the closest.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु– मगर बाबा, शास्त्रों में लिखा है कि भई, शंकर अमोघवीर्य मतलब शंकर भोग करते समय भी उसकी शक्ति क्षीण नहीं होती।
बाबा– तो आपने क्या समझा? आपने क्या समझ लिया? आपने कुछ और समझ लिया क्या? जिसका वीर्य इस.....बराबर लगातर होता रहेगा वो ज्ञान में ड़ब्बा गोल हो जायेगा या ज्ञान में तीखा होगा?
जिज्ञासु– ड़ब्बा गोल
बाबा– आपने क्या समझा? अरे, क्या समझा? मुख से बोलो ना।
जिज्ञासु– ड़ब्बा गोल हो जायेगा।
बाबा– ड़ब्बा गोल हो जायेगा। ज्ञानी और अज्ञानी। ज्ञानी वो जिसके प्रैक्टिकल जीवन में ज्ञान समाया हुआ हो। ज्ञान का अर्थ गृहस्थी ज्यादा समझेंगे या सन्यासी समझेंगे?
जिज्ञासु– गृहस्थी।
Student: But Baba, it has been written in the scriptures that Shankar is *amoghvirya* (the one whose energy doesn't fall). It means that Shankar does not get discharged even while experiencing pleasure.
Baba: So, what did you understand? What did you understand? Did you understand something else? Will the one whose *veerya* (semen) is continuously discharged be weak in knowledge or will he be sharp in knowledge?
Student: Weak.
Baba: What did you understand? *Arey* what did you understand? Say it through your mouth.
Student: He will be weak.
Baba: He will be weak. A knowledgeable [one] and an ignorant [person]; the knowledgeable [one] is the one in whose practical life the knowledge has been assimilated. Will the meaning of knowledge be understood more by the householders or by *sanyasis*?
Student: The householders.

बाबा– और दुनिया का बड़े ते बड़ा गृहस्थी कौन है? जगतपिता। जिसको कहते है शंकर। इसलिए शंकर का नाम शिव के साथ एड़ किया जाता है। जम दे जाम दे नहीं होता। पुरूषार्थ करने में, अभ्यास करने में टाईम लगता है। जब याद का अभ्यास तीखा हो जाता है, मन एकाग्र हो जाता है तो इन्द्रियाँ अपना भोग छोड़ देती है। नहीं समझ आया? जैसे आँख देख रही है लेकिन मन कहीं दूसरी जगह लगा हुआ है फिर उस आदमी से पूछा जाए तुमने क्या देखा? इतनी सुंदर–2 स्त्रियाँ सामने से निकल गई, तुम्हारी बुद्धि कहाँ थी? तो कहेगा हमने कुछ नहीं देखा। क्यों ऐसा हुआ? आँख खुली रही, उसने आपना भोग स्वीकार क्यों नहीं किया? क्योंकि मन दूसरी जगह लगा हुआ था।
Baba: And who is the biggest householder of the world? [It is] *Jagatpita* (the father of the world), who is called Shankar. This is why Shankar's name is added with that of Shiv. Nothing can happen all of a sudden. It takes time to make *purusharth* (spiritual effort), to practice. When the practice of remembrance becomes sharp, when the mind becomes focused, the organs renounce their pleasure. Did you not understand? For example, the eyes are seeing but the mind is busy somewhere else and if that person is asked what did he see; so many beautiful women passed before you, where was your intellect? He will say that he did not see anything. Why did it happen like this? The eyes remained open. Why did they not experience their pleasure? It is because the mind was busy somewhere else.

ये मन को एकाग्र करने की प्रैक्टिस मन–बुद्धि और संस्कार का जो बाप है परमपिता परमात्मा शिव वो ही सिखाता है। उस एक के अलावा और कोई राजयोग नहीं सिखा सकता और वो एक ही मुकर्रर रथ में आके सिखाता है। न ब्रह्मा के द्वारा सिखाता, न विष्णु के द्वारा सिखाता, न कोई धर्मपिताओं के द्वारा सिखाता। तो बिच्छू टिंड़न अधूरे अभ्यास की स्टेज में पैदा हुए या जब

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

वो एक सेकेण्ड़ आ जायेगा तब पैदा हुए? जब अधूरा अभ्यास है तो पैदा होते है। जब सम्पन्न स्टेज है, सम्पूर्ण ब्राह्मण सो सम्पूर्ण देवता। फिर बिच्छू टिंड़न पैदा होंगे क्या? अरे, प्रजापिता भी तो ब्रह्मा है या नहीं है? वो विष्णू नहीं बनता क्या? ब्रह्मा पाँच है। पहले नंबर ब्रह्मा कौन? प्रजापिता। तो पहले नम्बर में विष्णु कौन बनेगा? प्रजापिता।

The practice of focusing the mind is taught only by the Father of the mind, intellect and *sanskars*, i.e. the Supreme Father, Supreme Soul Shiv. Nobody except that One can teach *rajyog* and He comes in only one permanent chariot and teaches it. He teaches neither through Brahma, nor through Vishnu nor through any religious fathers. So, were the scorpions and spiders born in the stage of incomplete practice or were they born when that 'one second' comes? They are born when the practice is incomplete. When the stage is perfect, [then] a complete Brahmin becomes a complete deity. Then, will scorpions and spiders be born? Arey, is Prajapita also a Brahma or not? Does he not become Vishnu? There are five Brahmas. Who is the first Brahma? Prajapita. So, who will become the number one Vishnu? Prajapita.

39.55–41.23

जिज्ञासु– अकेला पुरूष राजयोग खुद सीख रहा है तो स्त्री चोला अकेला राजयोग सीख सकती है क्या?

बाबा– सन्यासी कहें कि हम राजयोग सीखने वाले है, भगवान हमें राजयोग सिखाता है। लेकिन भगवान प्रवृत्तिमार्ग वाले गृहस्थियों को राजयोग सिखाता है या सन्यासियों को सिखाता है?

जिज्ञासु– प्रवृत्तिमार्ग वालों।

बाबा– फिर।

जिज्ञासु– जब माना ब्रह्मा जब तक जीवित थे तब तक राजयोग सिखाया नहीं?

बाबा– ब्रह्मा जिन्हें हम कहते है कि प्रवृत्तिमार्ग का था। तो वो प्रवृत्तिमार्ग का था क्या? था ही नहीं। ब्रह्माकुमारियाँ जो अपन को कहती है कि भगवान हमें प्रवृत्तिमार्ग का ज्ञान सिखाता है; वो प्रवृत्तिमार्ग की हैं क्या? हैं ही नहीं। तो कैसे कहती है हम राजयोग सीखते है? भगवान ने राजयोग प्रवृत्तिमार्ग में रहकर के सिखाया है। खुद ही प्रैक्टिकल नहीं करने वाला होगा तो दूसरों को क्या सिखायेगा? जो टीचर होता है क्लास में सिर्फ थियोरी पढ़ाता रहे और प्रैक्टिकल में कुछ भी नहीं जानता हो तो उसे टीचर कहेंगे? वो सुप्रीम टीचर कैसे हो सकता है? नहीं समझ में आ रहा है? आ गया।

Time: 39.55-41.23

Student: If a single man is learning *rajyog* himself, then, can a female learn *rajyog* alone?

Baba: If *sanyasis* say, "we learn *rajyog*; God teaches us *rajyog*". But does God teach *rajyog* to the householders who follow the path of household or does He teach the *sanyasis*?

Student: To those who follow the path of household.

Baba: Then?

Student: Does it mean that Brahma did not teach *rajyog* as long as he was alive?

Baba: Brahma, about whom we say that he belonged to the path of household, so, did he (actually) belong to the path of household? He did not belong (to the path of household) at all. Brahmakumaris, who claim that God teaches them the knowledge of the path of household; do they actually belong to the path of household? Not at all. So, how do they claim that they learn *rajyog*? God has taught rajyog while living in the path of household. If He himself does not follow it in practical, how will he teach others? If a teacher keeps on teaching just theory in the class and does not know anything in practical, then will he be called a teacher? How can he be the Supreme Teacher? Did you not understand? You did.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

42.06–43.48
जिज्ञासु– बाबा प्रजापिता ब्रह्मा जब तक विष्णु नहीं बनेगा तब तक जो बच्चे पैदा होते हैं वो सब बिच्छु टिंड़न के लिस्ट में हैं?
बाबा– और बच्चों को छोड़ दो आप आ जाओ मैदान में। संगी साथी बनो, सजनी बन जाओ। क्यों देहभान आता है बार–बार? अरे, जब प्रवृत्तिमार्ग है तो जो जोड़ा है वो समान शक्ति वाला होना चाहिए या एक जोड़ा में एक बहुत छोटा और एक बहुत लम्बा हो, एक बहुत मोटा हो और एक बहुत.... तो ये जोड़ी कही जायेगी?
जिज्ञासु– नहीं कही जायेगी।
बाबा– हाँ, तो बाप ये मौका सबको देते हैं। कोई ये ना कहे हमारा पार्ट क्यों नहीं, इनका पार्ट क्यों कर दिया? तो सबको मौका है। सब बच्चे, सर्वसंबंध बाप के साथ निभाए सकते है। कोई ऊँगली न उठायें कि देखो हमको मौका नहीं दिया। नहीं तो ऊँगली तो उठाते हैं। नहीं उठाते हैं? चाहे जगदम्बा हो, चाहे गंगा हो, चाहे यमुना हो ऊँगली तो उठाते हैं ना कि हमारा पार्वती का पार्ट क्यों नहीं? हमने इतनी मेहनत की; हमारा नम्बर क्यों नहीं? तो बाप किसी को ऊँगली उठाने का मौका नहीं देते।
Time: 42.06-43.48
Student: Baba, are the children, who are born before Prajapita Brahma becomes Vishnu included in the list of scorpions and spiders?
Baba: Leave other children; you, come to the battlefield (i.e. speak about yourself). Become a companion, become a wife. Why do you become body conscious again and again? Arey, when it is a path of household, should the couple be equally powerful or if in a couple one is very short and one is very tall or if one is very fat and one is very (thin)... so, will this be called a couple?
Student: It will not be called (a couple).
Baba: Yes, so the Father gives this chance to everyone; nobody should say, 'why is it not my part'? Why is it his part? So, everyone has a chance. All the children can maintain all relationships with the Father. Nobody should raise a finger: I have not been given a chance. Otherwise, they do raise a finger. Don't they raise it? Whether it is Jagdamba, whether it is Ganga, whether it is Yamuna, they do raise a finger, don't they? Why isn't my part of Parvati? I worked so hard; why is it not my *number* (the rank of Parvati)? So, the Father does not give anyone a chance to raise a finger [at Him].

43.49–45.05
जिज्ञासु– इन्द्रसभा में जब अमृत बांटा गया....
बाबा– इन्द्रसभा में अमृत बांटा गया?
जिज्ञासु– देव और असुर।
बाबा– हाँ, देवासुर संग्राम हुआ।
जिज्ञासु– तो अमृत बांटा गया। तो उस समय असुर भी देवताओं की लाइन में अमृत पीने के लिए आये।
बाबा– कोई–2 असुर। यहाँ भी ऐसे बैठे होंगे। जो खूब विकारों में जाते होंगे, खूब पतित बनते होंगे। उनकी बुद्धि में ये बात आती नहीं है कि बाप ने बोला हुआ है भाई–बहन होकर के रहना है तो भाई–बहन को साथ–साथ सोने की भी क्या दरकार है? दरकार है?
जिज्ञासु– नहीं।
बाबा– भाई–बहन है तो भावना ही नहीं पैदा होगी; लेकिन जबरियन ऐसे करते है और फिर आकर के सभा में बैठते है कि देंखे ये क्या हमारा बिगाड़ लेंगे, देखे जानेंगे कि नहीं जानेंगे। वायब्रेशन खराब होते रहते हैं, विपरीत वायब्रेशन चलाते रहते हैं।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Time: 43.49-45.05
Student: When nectar was distributed in the Court of Indra *(Indrasabha)...*
Baba: Nectar was distributed in the Court of Indra?
Student: Deities and demons.
Baba: Yes, a war was fought between the deities and the demons.
Student: So, nectar was distributed. So, at that time the demons also came in the line of the deities to drink nectar.
Baba: Some demons [came]. Some might be sitting even here. Those who indulge a lot in vices , who must be becoming very sinful, it doesn't come to their intellect that the Father has said, "we have to live as brothers and sisters"; so, is there any need for brothers and sisters to sleep together? Is there any need?
Student: No.
Baba: If they are brothers and sisters, such a feeling will not emerge at all. But they do like this purposely and then come and sit in the gathering [thinking:] "Let's see, what harm He can bring to me. Let me see whether He comes to know or not". The vibrations go on spoiling. They keep on creating opposite vibrations.

46.28–49.00
जिज्ञासु– बाबा, ये ज्ञान हम किसी को समझाते हैं तो ब्रह्माकुमारियों का जिक्र आया तो भी चल सकता है? ब्रह्माकुमारी संस्था का उसमें जिक्र आया बताते समय तो भी कोई खराब बात नहीं ना?
बाबा– अगर जिक्र ही नहीं करेंगे तो कौरव कौन है और पाण्ड़व कौन है और कैसे भाई–2 है ये साबित कैसे करेंगे? अरे, कौरव–पाण्ड़व एक ही परिवार के थे या अलग–2 थे? एक ही परिवार थे।
जिज्ञासु– किसी को नये को ज्ञान देते हैं.....।
बाबा– हाँ, तो उन्हें बताओ कि ब्रह्मा की औलाद दो प्रकार के – एक अधूरे पुरूषार्थी, एक सम्पन्न पुरूषार्थ करने वाले। जो सम्पन्न स्टेज का पुरूषार्थ करने वाले ब्राह्मण है वो श्रेष्ठ ब्राह्मणों की गिनती बहुत थोड़ी है; वो विश्वमित्र और वशिष्ठ जैसी कैटेगिरी के है और जो दुष्ट ब्राह्मण हैं वो ज्ञान तो लेते हैं, ब्रह्मा की औलाद तो बनते हैं, ब्राह्मण तो कहलाते हैं लेकिन कुंभकर्ण, रावण और मेघनाद जैसा पुरूषार्थ करते हैं। तो समझाओगे कैसे?
Time: 46.28-49.00
Student: Baba, is it ok if we mention about the Brahmakumaris when we explain this knowledge to someone? If we mention about the Brahmakumaris institution while explaining (to someone), then it is not wrong, is it?
Baba: If you do not mention it at all, then how will you prove who the Kauravas are and who the Pandavas are and how they are brothers? Arey, did the Kauravas and Pandavas belong to the same family or to different families? They belonged to the same family.
Student: When we give knowledge to a new person...
Baba: Yes, so tell them that Brahma's children are of two kinds, one are incomplete *purusharthis* (those who make spiritual effort) and the other are those who make perfect *purusharth* (spiritual effort). The number of elevated Brahmins who make *purusharth* of the perfect stage is very less; they are from the category of Brahmins like Vishwamitra and Vashishth and as regards the wicked Brahmins, they do obtain knowledge, they do become Brahma's children, they are definitely called Brahmins, but they make *purusharth* like Kumbhakarna, Ravan and Meghnad (villainous characters in the epic Ramayana). So, how will you explain?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु– वो आत्मा अगर कोई सेन्टर पर जाता है बी.के.पहले प्राईमरी कोर्स करने के लिए तो उसमें कोई....., ठीक है ना वो भी?
बाबा– प्राईमरी कोर्स...
जिज्ञासु– बेसिक कोर्स
बाबा– बेसिक कोर्स सतोप्रधान नहीं होता है क्या? बेसिक कोर्स सदैव ही तमोप्रधान ही होता है क्या? जो सतोप्रधान बेसिक कोर्स है वही एड़वान्स कोर्स है। बेसिक कोर्स को अलग सुनाना फिर एड़वान्स कोर्स को अलग सुनाना ये तो ठीक नहीं है। बेसिक में एड़वान्स ही मिक्स कर के सुना दें तो हर्जा क्या है? हमें तो सच्चाई ही सुनानी है या झूठा सुनाना है?
जिज्ञासु– सच्चाई।
बाबा– बेसिक सुनायें तो भी सच्चा सुनायें, एड़वांस सुनायें तो भी सच्चा सुनायें।
Student: If that soul goes to some bk center to receive the primary course, then... that too is fine, isn't it?
Baba: Primary course...
Student: Basic course...
Baba: Is the basic course not *satopradhan*[1] ? Is the basic course always *tamopradhan*[2] ? The *satopradhan* basic course itself is the advance course. It is not correct to narrate the basic course and advance course separately. What is the harm in narrating the basic course mixed with advance knowledge? Do we have to narrate only the truth or do we have to narrate lies?
Student: The truth.
Baba: Even when we narrate the basic knowledge we should narrate the truth and even if we narrate the advance knowledge we should narrate the truth.

50.16–51.24
जिज्ञासु– बाबा, महाशिवरात्री आई है ना तो बाबा की जो जीवन कहानी है, वो लोगों को बांटेंगे तो चलेगा ना?
बाबा– भले चलेगा; लेकिन समझानी तो आपको ही है।
जिज्ञासु– जो समझेंगे उनको समझायेंगे। बाकी ऐसे ही बांट देंगे।
बाबा– और जो झगड़ेंगे तो?
जिज्ञासु– तब बाप है ना हमारे साथ।
बाबा– अच्छा, तब बाबा को आगे कर देंगे? बाबा तो कहेगा हमारी.... ये तो झूठी बात किसी ने छाप दी है। बाबा स्वीकार नहीं करेंगे तब क्या करेंगे? फिर आप ही पकड़े जायेंगे।
जिज्ञासु– बाबा छुड़ाने के लिए है ना अभी, बाबा छुड़ायेंगे ना।
बाबा– बाबा तो बच्चों से बात करेंगे। दूसरों से क्यों बात करेंगे?
जिज्ञासु– तो बाँटे या न बाँटे?
बाबा– आप फँस जायेंगे कि नहीं? अगर आप समझते हैं कि हम नहीं फँसने वाले तो बाँटो, डर लगता है तो न बाँटो।
जिज्ञासु– नहीं लगता।
बाबा– नहीं लगता है तो बाँटो।
Time: 50.16-51.24
Student: Baba, can we distribute Baba's biography to people on Mahashivratri?
Baba: It will do, but you it is you who have to explain [it].
Student: We will explain to those who understand. To the remaining people we will simply distribute the books.
Baba: And what if they fight?
Student: Then the Father is with us, isn't He?

[1] consisting the quality of goodness and purity
[2] dominated by darkness and ignorance

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: *Accha*, then you will keep Baba in the front? Baba will say that someone has printed false things. Baba will not accept it; then what will you do? Then it is you who will be caught.
Student: Baba is there to get us freed. Baba will get us freed, will he not?
Baba: Baba will speak to the children. Why will he speak to others?
Student: So, should we distribute or not?
Baba: Will you be caught or not? If you feel that you will not be caught, then you may distribute it; if you feel afraid then don't distribute it.
Student: I do not feel afraid.
Baba: If you do not feel afraid, then distribute it.

51.26–52.50
बाबा– लगता है बम्बई में निर्बन्धन आत्मायें ज्यादा हैं। निर्बन्धन होना भी बहुत भाग्य की निशानी है। क्या? जिन्होंने पूर्वजन्मों में बहुत अच्छे कर्म किये है वो इस संगमयुग में आकर, उनकी निशानी क्या होगी? निर्बन्धन होंगे। धन से भी निर्बन्धन, तन से भी निर्बन्धन, संबंधियों से भी निर्बन्धन और समय के बंधन से भी निर्बन्धन। सम्पर्की भी उनके ज्यादा पीछे नहीं पड़ेंगे कि तुम कहाँ जाते हो। और?
जिज्ञासु– बाबा कोई निर्बन्धन है फिर भी कहे कि हमको समय ही नहीं।
बाबा– इसका मतलब महाकाल ने बाँध रखा है, काल ने बाँध के रखा हुआ है। जो कहे कि हमारे पास टाईम ही नहीं है इसका मतलब व्हेयर इस द विल, देयर इस द वे है ही नहीं।
Time: 51.26-52.50
Baba: It appears as if there are more souls who are free from bondages (*nirbandhan*) in Mumbai. Being free from bondages is also an indication of being very fortunate. What? In this Confluence Age what will be the indication of those who have performed very good actions in the past births? They will be free from bondages. They will be free from the bondage of wealth; they will be free from the bondage of the body; they will be free from the bondage of the relatives and they will also be free from the bondage of time; the people who come in their contact will also not trouble them by asking where they go. Anything else?
Student: Baba, if someone is free, yet says that he does not have time.
Baba: It means that *Mahakaal* has tied them up, *kaal* (time) has tied them up. The one who says that he does not have time at all, then it means that he does not go according to the proverb 'where there is a will, there is a way'.

52.52–56.56
जिज्ञासु– बाबा भगवान जो शब्द है ये पद है। भगवान जो शब्द है वो पद है। जैसे गॉड़ हुआ वो पद हुआ तो उस जगह पर जो भी व्यक्ति जिसको भी जो श्रद्धा है, जिसको बिठाया हुआ है, भगवान के पद पे भक्तिमार्ग में देवताओं को भी लोग बिठा के रखते हैं। तो उनके लिये वही भक्ति का भाड़ा देते है देवता जो उनके सामने भगवान बने बैठे हैं। जो भगवान के रूप में वहाँ बैठा हुआ है।
बाबा– भक्तिमार्ग में तो सभी भगवान के रूप में बैठे हुए है। 24 अवतार भगवान के रूप में बैठे हुए है। कोई जानवर ऐसा नहीं छोड़ा जो भगवान बनके न बैठ जाये। हाँ, तो?
जिज्ञासु– इसकी शूटिंग मतलब यहाँ पर कैसे होती है?
बाबा– शूटिंग यहाँ होती है। जो जानवरियत जैसे स्वभाव वाले हैं उनको भी भगवान बनाकर बैठाया हुआ है भक्तों ने।
Time: 52.52-56.56
Student: Baba, the word 'Bhagwaan' (God)... it is a post. The word 'Bhagwaan' is a post. For example, God is a post. So, whichever person has been seated in that place as per faith, on the post of Bhagwaan; in the path of *bhakti*, people even place the deities in that place. So, they i.e.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

deities, who are sitting as God in front of them, give them the fruits of *bhakti*. The one who is sitting in the form of God...
Baba: In the path of *bhakti* everyone is sitting in the form of God. There are 24 incarnations sitting in the form of God. They have not spared any animal which doesn't sit as God. Yes, so?
Student: I mean to ask, how does its shooting take place here?
Baba: The shooting takes place here. The devotees have appointed even the people with animal-like nature as God.

जिज्ञासु– दूसरों को जो दुःख देते हैं और ब्राह्मणों के दुनिया में भी कुछ ऐसे हैं जो दूसरों को दुःख देते हैं और कुछ ऐसे हैं जो दूसरों को सुख देते हैं। आत्माओं में भी ये क्वालिटी है। सुख देने और दुःख देने के निमित्त बनते हैं तो जो सुख देता है उसके लिए वो ऐसा लगता है उसको कि हमारा जो है कर्ता–धर्ता भगवान वही है।
बाबा– माना सुख देनेवाला भगवान है?
जिज्ञासु– उसको लगता है।
बाबा– अगर कोई सुख देता है एक परसेन्ट तो वो भी भगवान है?
जिज्ञासु– वो ऐसा मानता है सामने वाला।
बाबा– हाँ–2, सुख देने वाला है वो भगवान है और दुख देने वाला है वो शैतान है?
जिज्ञासु– शैतान है, रावण है।
बाबा– हाँ, रावण है। ये परिभाषा, ये ड़ेफिनिशन मान ली जाए?
Student: Those who give sorrow to others; and even in the world of Brahmins there are some who give sorrow to others and there are some who give happiness to others. There is this quality in the souls as well.They become instruments in giving happiness and sorrow. So, for the one who receives happiness, it appears as if he (gives happiness) is the master and God.
Baba: Does it mean that the one who gives happiness is God?
Student: He (who gets happiness) feels so.
Baba: And is the one who gives even one percent happiness God?
Student: The observer feels like that.
Baba: Yes, yes. Is the one who gives happiness God and the one who gives sorrows a devil?
Student: He is a devil, he is Ravan.
Baba: Yes, he is Ravan. Should we accept this definition?

जिज्ञासु– नहीं, ये ड़ेफिनिशन... हम आपसे क्लीयर करना चाहते है।
बाबा– क्लीयर ये करो कि भगवान सुख ही देने वाला है। भगवान एक परसेन्ट भी दुख देने वाला नहीं। समझने वाला भल समझे कि भगवान ने हमको दुख दिया; लेकिन जब ज्ञान खुलेगा तो उसको ये पता चलेगा कि भगवान एवर लास्टिंग सुख देने वाला है। जो टोटल रिजल्ट निकलता है वो सुख देने का रिजल्ट ज्यादा निकलेगा और दुख देना सिर्फ इसलिए कि बदल जाये।
जिज्ञासु– बाबा, भक्तिमार्ग में भी भगवान कहा जाता है, ईश्वर एक है, भगवान एक है लेकिन वो एक भी अँगुली उठाके कोई नहीं कहता कि ये है भगवान।
बाबा– और ज्ञानमार्ग में?
जिज्ञासु– और ज्ञानमार्ग में जिसने बात को समझ लिया है वो अँगुली उठाके कह सकता कि ये है हमारा भगवान।
बाबा– ठीक है। फिर?
जिज्ञासु– तो वही उसको ड़ेफिनिशन हुआ ना....।
बाबा– ये उसका ड़ेफिनिशन नहीं हुआ। ये अज्ञान और ज्ञान की बात है। जिसके बुद्धि में ज्ञान बैठ गया वो कन्फर्म हो के बोलेगा और जिसके बुद्धि में ज्ञान नहीं है वो भटकता हुआ

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बोलेगा। ये भी है, वो हो सकता है, ये भी है, वो भी हो सकता है, ये हो सकता है, शायद नहीं हो सकता है माना बुद्धि भटक रही है।
Student: No, this definition.... I want to make this clear.
Baba: Make it clear that it is God who gives only happiness. God does not give even one percent of sorrow. The concerned person may think that God gave us sorrow, but when the knowledge is revealed, he will know that God gives us everlasting happiness. The total result that emerges will have a greater component of happiness and the sorrow will only be for the purpose of transformation.
Student: Baba, even in the path of *bhakti*, the word *Bhagwan* is used; God is one, but nobody points a finger to say that this one is God.
Baba: And what about the path of knowledge?
Student: In the path of knowledge, the one who has understood the subject can raise a finger and say that this is our God.
Baba: It is ok. Then?
Student: That is the definition, isn't it?
Baba: This is not its definition. This is about ignorance and knowledge. The one in whose intellect the knowledge has seated will say in a confirmed way; the one in whose intellect there isn't the knowledge will speak in a shaky way. This one is also (God); that one can also be (God); this one is also (God); that one can also be (God); this one could be (God); perhaps he may not be; i.e. the intellect is wandering.

जिज्ञासु– माना भगवान शब्द जो है पद हो गया ना?
बाबा– हाँ, लेकिन जो पद हो गया वो पद किसी और को नहीं दिया जा सकता।
जिज्ञासु– किसी और को नहीं दिया.....
बाबा– जो भगवान है वो एक ही होगा। दो या चार नहीं हो सकते, 24 नहीं हो सकते, दसावतार नहीं हो सकते।
जिज्ञासु– लेकिन भक्तिमार्ग में सबने यही कहा कि ईश्वर एक है, भगवान एक है लेकिन अँगुली उठाके किसी ने भी ये नहीं बताया कि ये है।
बाबा– इसलिए तो भक्ति कहते हैं उसको। उसको ज्ञान कहां कहते हैं? भक्ति माना जिसकी बुद्धि भागती रहे, स्थिरियम न हो।
जिज्ञासु– ऊँगली ऐसे ऊपर उठी है।
बाबा– हाँ, ऊँची स्टेज में है। ये स्थूल ऊँगली की बात नहीं है।
Student: It means that the word Bhagwan is a post, isn't it?
Baba: Yes, but this post cannot be given to anyone else.
Student: It cannot be given to anyone else....
Baba: God will be only one. He cannot be two or four or twenty four; there cannot be ten incarnations.
Student: But in the path of *bhakti*, everyone said that God is one, but nobody could point a finger and say, this is the One.
Baba: This is why it is called *bhakti.* Is it called knowledge? *Bhakti* means the one whose intellect keeps running; it does not remain constant.
Student: The finger has been pointed upwards, like this.
Baba: Yes, He is in a high stage. This is not about the physical finger.

57.05–1.02.20
जिज्ञासु– बाबा, भट्ठी कहाँ खंड़ित होती है?
बाबा– भट्ठी कहाँ खंड़ित होती है? कोई स्थान की ही बात है, समय की ही बात है, व्यक्ति की ही बात है। जो भट्ठी का स्थान निश्चित है और भट्ठी करने गये, मुरली में सात दिन का

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

टाईम बताया है। उस स्थान से बाहर हो गये तो भट्ठी खंड़ित हो गई। समय की बात बताई 7 दिन की। पहले दिन जाना और सातवे दिन निकलना। बीच में 5 दिन पूरे होने चाहिए 24 घंटे के और बीच में खंड़ित हो गई। टाईम से बाहर हो गये, पहले ही आ गये बाहर तो भट्ठी खंड़ित हो गई। जिस स्थान और समय के दायरे में वहाँ रहे हुए है। जिन व्यक्तियों के बीच में है, जिस परिवार के बीच में है उस परिवार से झगड़ा हो गया; तो अनिश्चय पैदा होगा ना? अनिश्चय पैदा होगा, बुद्धि बाहर की दुनिया में चली गई, मजबूरी में वहाँ टाईम पूरा कर रहे हैं; भट्ठी खंड़ित हो गई।

Time: 57.05-01.02.20

Student: Baba, where does (a person's) *bhatti* break?

Baba: Where does (a person's) *bhatti* break? It is about a place, a time, a person only. The place that is fixed for *bhatti* and someone goes to do *bhatti*; seven days time has been mentioned in Murli (for *bhatti*). If you go out of that place then the *bhatti* is broken. A seven days time has been mentioned. First day for arrival and the seventh day for departure; there should be full five days of 24 hours each in between. And if it is broken, if you come out before time, if you come out (of *bhatti*) before time, the *bhatti* is broken. The limits of place and time within which you are living there, the people with whom you are living, the family in which you are living, if you start fighting with that family, then you will lose the faith, won't you? The faith will be lost; the intellect went to the outside world; if you are completing the time under compulsion, then the *bhatti* is broken.

भट्ठी तो ऐसे है जैसे 9 महीने का गर्भ होता है तो बच्चा अंदर ही रहता है। खाना, दाना, पानी सब कुछ अंदर मिलता है। बाहर की दुनिया एकदम भूल जानी चाहिए। इतनी खुशी बढ़ जाये कि बाहर की दुनिया याद ही न आये। सतयुग–त्रेता में भी गर्भ से पैदा होंगे; भल वो गर्भ महल कहा जाता है। सतयुग और त्रेता का जन्म द्वापर और कलियुग के जन्म से श्रेष्ठ माना जाता है, वो गर्भ महल भी कहा जाता है लेकिन संगमयुग में जो ज्ञान गर्भ है वो उससे श्रेष्ठ होना चाहिए या निकृष्ठ होना चाहिए? उससे भी श्रेष्ठ होना चाहिए। तो 7 दिन के फाउन्ड़ेशन में हर आत्मा अपने को देखे उन 7 दिनों में हमारी अवस्था कैसी रही? गर्भमहल में रहे या गर्भजेल में रहे?

Bhatti is like the period of nine months in the womb. The child remains inside. It gets everything including food, water inside. You should forget the outside world completely. The happiness should increase to such a level that you should not remember the outside world at all. Even in the Golden Age and Silver Age children will be born from the womb, although it is called a womb like palace. The births in the Golden Age and Silver Age are considered to be greater than the births in the Copper Age and Iron Age. It is also called a womb like palace, but should the womb of knowledge in the Confluence Age be more elevated than that or lower than that? It should be more elevated than that. So, in the foundation period of seven days every soul should check itself, 'how was our stage in those 7 days? Did we remain in a womb like palace or in a womb like jail?'

तो देखने में आवेगा कि जिन्हों–जिन्होंने वहाँ मुर्गीखाना समझा 7 दिन वो एड़वान्स के विरोधी होकर के बैठ हुए हैं। ऐसी भी आत्मायें हैं भट्ठी करने वाली जो विशाखापट्नम के कैसे माहौल में रहने वाली? सतयुग में माहौल कैसा होता है? न सर्दी, न गर्मी। ऐसे माहौल में रहने वाली आत्मा कम्पिल की भट्ठी में जिस समय ऊपर शेड (shed) भी नहीं था। छत खूब गरम होती थी और भाईयों को उस गरम छत के नीचे रहना पड़ता था गर्मी में, पंखों का भी प्रबंध नहीं था उतना और बिजली आती भी नहीं और 7 दिन उन्होंने इतनी खुशी में गुमाये कि उनको ये ही पता नहीं लगा कि हम गर्मी में हैं कि सर्दी में हैं? ज्ञान का लेन–देन, मनन–चिंतन–मंथन में लगे रहे तो उनका गर्भ महल हुआ या गर्भ जेल महसूस की?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु– गर्भ महल।
Then it can be observed that those who considered it to be a poultry farm for seven days are sitting in the form of opponents of the advance party. Such souls have also done *bhatti*, who live in... what kind of atmosphere in Vishakhapatnam? What kind of an atmosphere is prevalent in the Golden Age? Neither cold nor heat. A soul which is used to living in such an atmosphere did *bhatti* in Kampil when there wasn't even a proper shed above. The terrace used to be very hot and at that time brothers had to live under that hot roof in summers; there was no arrangement of fans to that extent and even the power supply was irregular and they spent the seven days in such happiness that they did not know whether they are living in heat or cold. They remained busy in the exchange of knowledge, thinking and churning; so was it a womb like palace or a jail-like womb for them?
Student: A womb like palace.

बाबा– बाबा को कभी एक–दो घंटे वहाँ ऊपर जाके भाईयों के साथ बैठना होता है। बाबा ने महसूस भले किया। अरे, बड़ी गर्मी है लेकिन उनको बिल्कुल इसका कोई गम नहीं तो उनका गर्भ महल कहे या गर्भ जेल कहें? गर्भ महल है। सतयुग–त्रेता से भी ज्यादा श्रेष्ठ गर्भ महल है। तो फाउन्ड़ेशन जिसका अच्छा उसका सारा 84 जन्मों का फाउन्ड़ेशन पक्का हो गया। इतना पक्का और मजबूत बना के ले जाना चाहिए।
Baba: Baba had to sometimes sit with the brothers there for one or two hours. Baba may have felt, "Arey, it is very hot", but they never felt bad about it. So, can it be called a womb like palace or a womb like jail for them? It is a womb like palace. It is a womb like palce that is more elevated than the womb like palace of the Golden Age and Silver Age. So, the one whose foundation was good, his foundation for all the 84 births has become firm. You should make people so firm and strong and then take them (for bhatti).
……
Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info